आतंकवाद में अनेकांतवाद

: लेखक :
पण्डित फूलचन्द शास्त्री

आतंकवाद में अनेकांतवाद

समुद्र मार्ग से मुंबई में आनेवाले आतंकवादी पर क्रोध मत करो, द्वेष मत करो। बल्कि संसार समुद्र में डूबनेवालें उन आतंकवादी के प्रति करूणा करो। आतंकवादियों का लक्ष्य देश में आतंक फैलाना नहीं है, वे तो सिर्फ देशवासियों में आतंक फैलाना चाहते हैं।

ऐसा हो सकता है कि आपको मेरी इस कृति पर भी क्रोध आ सकता है परन्तु 'आतंकवाद में अनेकांतवाद' कृति का ध्येय किसी भी हिन्दुस्तानी के हृदय में द्वेषभावना उत्पन्न कराना नहीं है। अध्यात्म की दृष्टि से लिखी गई यह कृति लौकिक दृष्टि से अलग या अटपटी लग सकती है किन्तु इस कृति का ध्येय प्रत्येक जीव मंगल सुख की प्राप्ति करें यही हैं। भला करनेवालों का भला तो हर कोई

चाहते हैं किन्तु बुरा करनेवालों का भला चाहना ज्ञानी का कर्तव्य हैं। इसी का नाम अनेकांत दृष्टि है।

आग को आग से नहीं बुझाया जा सकता, आग को बुझाने के लिए पानी चाहिए। गोली का जवाब गोली से देने की बात तो दूर, गोली का जवाब गाली से भी मत दो।

कुछ लोग ऐसा कहते है कि आज देश को गांधीजी जैसे नेता की जरूरत नहीं है, देश को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए सुभाषचन्द्र बोझ और शहीद भगतसिंह जैसे नेताओं की जरूरत है। मेरा अंतरनाद तो यही कहता है कि आज देश को भगवान महावीर जैसे प्रणेता की आवश्यकता है।

पूज्य कानजीस्वामीजी कहते थे कि जिसने अपनी आत्मा को जाना नहीं, पहचाना नहीं वे जिन्दा मुर्दे है। जो आतंकवादी देश में आतंक मचा रहे हैं वे अपनी आत्मा को नहीं जानते, नहीं पहचानते इसीलिए उन्हें भी जिन्दा मुर्दे ही समजना चाहिए।

वे जिन्दा होने पर भी मरे हुए है। इस पर हमें गम्भीरता से सोचना चाहिए कि उन्हें मारकर हमें क्या मिलेगा? मरे हुए को मारना किस हद तक उचित है? मारने की बात तो छोडो, हम उन्हें मारने का भाव भी क्यों करें? हमारे मारने के भाव से वे तो मरते नहीं, पर इतना जरूर है कि हमारे मारने के भाव से भावमरण करके हम हर पल मर रहे हैं और हम अपना भवभ्रमण बढा ही रहे हैं।

मुंबई में हुए आतंकवादी हमले का गम कुछ दिन तो रहा किन्तु समय के चलते कुछ ही दिनों में लोग भूल भी जायेंगे। यह हादसा कोई महाभारत के युद्ध जैसा भयानक तो नहीं था। जब अठारह दिन तक चलनेवाले महाभारत के युद्ध का गम लोग भूल गये, तब दो दिन तक चलनेवाले आतंकवादी हमले की तो बात ही क्या? हाँ, इतना जरूर हुआ कि लोगोंने उन दो दिनों में ऐसे पापरूप भाव किये कि जिसके फलस्वरूप बंधे हुए कर्मों का फल उन्हें

अठारह भव तक भी भुगतना पड सकता हैं। हमारा यही कर्तव्य है कि अपने देश में फैले हुए आतंक का खौफ हमारे आत्मा के प्रदेश तक न पहुँचे। देश की सुरक्षा के साथ साथ आत्मा की रक्षा करना भी हमारा कर्तव्य है।

हम सबसे बडा अपराध यह करते हैं कि वास्तविक परिस्थिति का स्वीकार नहीं करके अनेक प्रकार की चित्र-विचित्र कल्पनाएँ करते है। हम सोचते है कि यदि सरकार नीतिवान और प्रामाणिक होती तो यह हादसा नहीं होता। भाई! आप यह क्यों नहीं सोचते कि हादसा तो हो चूका है और हो चूके हादसे को बदला भी नहीं जा सकता। फिर भी अज्ञानी की अनादिकाल से चली आ रही यह झूठी वृत्ति है कि वह अपनी कल्पना से सच को छुपाने की कोशिश करता है, जब कि ज्ञानी सच का सहजभावसे स्वीकार करते हैं जिससे झूठी विचित्र कल्पनाएँ ही उत्पन्न नहीं होती।

मांसाहारी प्राणियों के द्वारा मरनेवालें शाकाहारी प्राणियों के प्रति जो दया आती हैं ऐसी दया आतंकवादियों के प्रति क्यों नहीं आती? यह बात साफ है कि हमारी दया से आतंकवादियों का भला या बुरा होनेवाला नहीं हैं। उनका भला-बुरा तो भूतकाल में किये हुए उनके कर्मों के फल से ही होगा।

मगर इतना जरूर है कि उनके लिए जताई गई हमारी उत्तम भावना का फल हमें तो मिलकर ही रहेगा। हमें उनके लिए शुभ भावना जतानी चाहिए, इससे अपने आत्मा की उन्नति अवश्य होगी।

आप सिर्फ इतना ही क्यों मानते हो कि आतंकवादियों ने निर्दोष लोगों को मारा हैं। एक पल के लिए अनेकांत दृष्टिसे सोचो कि क्या मरनेवालों के आयुकर्म का उदय इतना ही नहीं था? सच तो यह है कि आयु पूर्ण हुए बिना कोई मरता नहीं है और आयु पूर्ण होने पर कोई बचता नहीं है। यदि यह परम सत्य है तो फिर उनके मरने में सिर्फ

निमित्त बननेवाले आतंकवादियों के प्रति हम द्वेष क्यों करें?

हम तो यहाँ तक देखते है कि जब हादसे के बारे में परामर्श चलता है तब हम भी भीड में जाकर आतंकवाद और सरकार की निंदा करते है। तब एक पल के लिए ऐसा भी विचार करना चाहिए कि जिन लोगों के साथ बैठकर मैं आतंकवादियों की निंदा करता हूँ उनमें से मेरा एक भी साथी मेरे भाव से मुजे बंधनेवाले कर्मों को भोगने में साथ देनेवाला नहीं है। इसीलिए उस भीड में जाकर किसी की निंदा करना ठीक नहीं है।

आतंकवादी किसी को दुःखी करने के लिए देशवासियों में आतंक नहीं फैलाते। वे तो सिर्फ जन्नत में जाने के लिए आतंक मचाते हैं। उनके दिल और दिमाग में यह बात बहुत गहराई से जड़ दी गई है कि यदि लड़ाई करते करते आप मर भी जाओगे तो आपको जन्नत जरूर मिलेगा। किसी भी मजहब

में यह नहीं लिखा है कि आतंक फैलाने से जन्नत मिलता है, सुख मिलता है। दुःख की बात यह है कि कुछ मजहब द्रोहियोंने अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए उन्हें धर्म का गलत बोध दिया। वे खुद तो संसार में डूबते हैं, साथ ही दूसरों को भी गलत राह दिखाकर डूबाते हैं। सच तो यह है कि गलत राह दिखानेवालें भी दयापात्र हैं। जिनका संसार परिभ्रमण बहुत होना है उन्हें ऐसे ही बुरे विचार आते हैं, उनकी होनहार भी ऐसी ही होती हैं, अतः उन पर भी द्वेष करना उचित नहीं हैं।

उन्होंने जो कुछ भी किया वह जन्नत में जाने के लिए और सुख पाने के लिए किया। किन्तु सुखी होने का रास्ता गलत अपनाया। हम अभी क्या कर रहे हैं? हिंसा आदि पाप करके, विषय का सुख भोगकर सुखी होना चाहते हैं इस दृष्टि से हमारा भी सुखी होने का माध्यम गलत ही हुआ। एक पल के लिए सच्चे हृदय से सोचिए कि क्या हमारे अंदर

भी ऐसा आतंकवाद छूपा है या नहीं? अनेकांत दृष्टि से विचार करने पर समझ में आयेगा कि वे आतंकवादी मेरी ही जाति के आत्मा हैं।

एक सज्जन पुरुष नदी में डूबते हुए बिच्छु को बचाने की कोशिश कर रहे थे, तभी बिच्छु ने खुद को बचाने की कोशिश कर रहे सज्जन को डँस लिया। किसी ने सज्जन पुरुष को पूछा, बिच्छु आपको डँस रहा है फिर भी आप उसे बचाने का प्रयत्न क्यों करते हैं? तब सज्ज्न पुरुष ने कहा, यदि बिच्छु अपना डँसने का स्वभाव नहीं छोडता तो मैं अपना बचाने का स्वभाव क्यों छोडूँ?

हमें भी किसी भी जीव के हित के लिए मंगल भावना भाने का स्वभाव नहीं छोडना चाहिए।

अनेकांत दृष्टि से आतंकवाद के बारे में विचार करने पर आतंकवाद से होनेवाला विकार उत्पन्न ही नहीं होगा।

''हमें तो उन आतंकवादियों के लिए यही भावना जतानी चाहिए कि आतंकवादी भी मोक्ष के मार्ग पर चलकर मोक्ष और अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करें।'' ऐसा उत्तर पण्डित फूलचन्द शास्त्री ने तब दिया जब उनसे यह पूछा गया कि हमें आतंकवादियों का क्या करना चाहिए?

एक इन्टरव्यू

प्रश्न : तो क्या उन पापी आतंकवादियों के हित के लिए भी शुभ भावना करनी चाहिए?

उत्तर : क्यों नहीं? क्या आप नहीं चाहते कि संसार में परिभ्रमण कर रहे सभी जीव मोक्ष और अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति करें? जब हम सभी संसारी जीव के लिए मुक्ति की कामना करते है तो आतंकवादी भी उनमें शामिल हुए या नहीं?

प्रश्न : क्या वे भी मुक्ति प्राप्त कर सकते है?

उत्तर : यदि मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते तो हम उनकी मुक्ति की कामना ही क्यों करते? किसी भी भव्य जीव को मुक्ति की प्राप्ति का अधिकार है।

प्रश्न : क्या वे आतंकवादी पलभर में पलटकर धर्मी हो जायेंगे?

उत्तर : आज तक जितने जीवों को आत्मज्ञान और वैराग्य प्रकट हुआ हैं उन्हें पलभर में ही हुआ हैं। अनंतकाल से चले आ रहे अज्ञान को दूर करने के लिए अनंतकाल नहीं लगता। रात्री के अंधकार को दूर होने के लिए पूरा दिन नहीं लगता।

प्रश्न : क्या निर्दोष लोगों को मारकर भी जीव पलभर में पलट सकता है?

उत्तर : भूतकाल में हो चूके चक्रवर्ती आदि राजा-महाराजा भी युद्ध में लाखों जीवों की हिंसा करके पलभर में वैरागी हुए थे तो आतंकवादी पलभर में वैरागी क्यों नहीं हो सकते? अर्थात् अवश्य हो सकते हैं।

प्रश्न : आतंकवादियों ने निर्दोष २०० लोगों को मार गिराया। देश की सारी जनता ने कहा कि हमारी भावनाओं को बहुत ठेस पहूँची है। दुःख तो इस बात का हुआ कि उन २०० लोगों का सामुहिक मरण हुआ। इस विषय पर आप क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर : देखो, जब आप गहराई से विचार करेंगे तब आपको समझ में आएगा कि उन २०० लोगों का सामुहिक मरण हुआ ही नहीं हैं। क्योंकि २०० लोगों के मरने का समय एक नहीं था। कोई दस बजे मरा तो कोई

दस बजकर दो मिनिट पर। सच यह भी है कि जब हम चलते हैं तब रास्ते में चींटियों का दर हो और २०० चींटियाँ हमारे पाँव के नीचे आकर मर जाये तो उनका सामुहिक मरण कहलाता हैं। हमारी सबसे बडी कमजोरी यह है कि अलग अलग समय पर हुए २०० मनुष्यों का मरण हमें सामुहिक मरण लगता हैं, किन्तु एक ही समय में मरनेवाली चींटियों का मरण हमें मरण ही नहीं लगता। हमारी दृष्टि में मनुष्य का मरण ही मरण है, हमें प्राणियों का मरण तो मरण लगता ही नहीं। इससे हम समझ सकते है कि हमारी सोच कितनी संकुचित है। यदि आप आतंकवादियों के द्वारा दो दिन में मरनेवाले २०० लोगों का सामुहिक मरण कहते हो, तो आप यह बात क्यों भूलते हो कि कमांडो के द्वारा

दो दिन में १० आतंकवादियों का भी सामुहिक मरण हुआ था। क्या आपको ऐसा लगता है कि किसी आत्मा का मरण हुआ? जैसी हमदर्दी आपने उन २०० लोगों के प्रति जताई वैसी हमदर्दी उन १० आतंकवादियों के प्रति क्यों नहीं जताई? बस यही कारण है कि वे आपकी नजर में दोषी थे। यदि वे आतंकवादी आपकी नजर में आत्मा होते तो आप उन १० आत्माओं के लिए वही भावना जताते जो आपने उन २०० आत्माओं के लिए जताई थी।

मरनेवाले २०० हो या १० हो, हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि मुझे भी एक दिन तो मरना ही है। यदि इस भव में बुरे भाव करके पापों का बोज साथ लेकर

नहीं जाना हो तो अपने भावों को बदल दो। मेरा दावा है कि जगत को बदलने का भाव ही टल जायेगा और बहुत ही निकट काल में संसार भी टल जायेगा।

प्रश्न : क्या आपको मालुम है कि मुंबई आने से पहले वे कितने भोग भोगकर आये थे, पाप की चरमसीमा तक पहूँचनेवालों को भी पलभर में वैराग्य आ सकता है?

उत्तर : चक्रवर्ती ९६००० रानियों को भोगकर भी पलभर में वैरागी हो जाते थे। मेरा यह विश्वास है कि आतंकवादी ९६००० स्त्रियों को भोगकर मुंबई नहीं आए होंगे।

प्रश्न : वह काल अलग था, यह काल अलग है, आपको ऐसा नहीं लगता?

उत्तर : काल अलग है परन्तु आत्मा तो वही है न ! काल बदल गया पर आत्मा का स्वभाव

थोडे ही बदला है ! चौथे काल में आत्मा में जो शक्ति थी वही शक्ति इस पंचमकाल में भी आत्मा में है।

प्रश्न : तो क्या इस काल में भी हम अपनी आत्मा का हित कर सकते हैं?

उत्तर : यदि इस काल में आत्मा का हित नहीं कर सकते तो ज्ञानी इस काल में उपदेश देते ही क्यों? तुम हित कर सकते हो इसीलिए तो तुम्हें उपदेश देते हैं।

प्रश्न : यदि वे आतंकवादी अपना नुकसान करें तो?

उत्तर : ज्ञानी कहते हैं कि आप जिन पदार्थों में अपनापन कर रहे हो वे पदार्थ वास्तव में अपने हैं ही नहीं। आतंकवादी तो क्या दुनिया की कोई भी शक्ति आत्मा का नाश

नहीं कर सकती। इसीलिए निश्चिंत हो जाओ।

हमें यह मानना चाहिए कि उन्हों ने हमारा कुछ भी नहीं किया, जो कुछ भी हुआ है वह हमारे कर्मों के उदय से और उस समय की योग्यता से ही हुआ है यह त्रिकाल सत्य है।

प्रश्न : हम कितना अन्याय सहन करेंगे? कब तक उनके हित के लिए अच्छी भावनाएँ भाते रहेंगे? क्या उन्हें जब तक मुक्ति नहीं मिलती तब तक?

उत्तर : भावनाएँ उनके हित के लिए जतानी हैं फिर भी उसमें अपनी आत्मा का भी हित छुपा हुआ है। जब तक हमें मुक्ति नहीं मिलती तब तक हमें उनकी मुक्ति की भी कामना

करनी चाहिए। याद रहें कि एक पल के लिए भी किसी के प्रति द्वेष पैदा न हो।

प्रश्न : आतंकवादी आपके क्या रिश्तेदार लगते हैं? आप उनकी इतनी तरफ़दारी क्यों करते हो?

उत्तर : देखो भाई! हम आतंकवादी की तरफ़दारी नहीं कर रहे हैं। हम तो सिर्फ यह बताना चाहते हैं कि आतंकवादी भी हम-तुम जैसे आत्मा ही हैं। तुम्हें इस बात का एहसास दिलाना चाहते हैं कि यदि वे आतंकवादी आपके रिश्तेदार होते तो आप क्या करते? यदि आपका जन्म उनके परिवार में उनके भाई या बहन के रूप में हुआ होता तो आप क्या करते? मुझे विश्वास है कि आप उन्हें नफरत तो नहीं करते बल्कि उनकी गलतियों को माफ करके उन्हें सच्चाई का रास्ता दिखाते।

प्रश्न : जो कायर होते है वे ऐसी क्षमा करने की बातें करते है कि आतंकवादियों को भी माफ कर देना चाहिए?

उत्तर : क्षमा करना यदि कायरता है तो क्षमा को वीर का आभूषण क्यों कहा है? दुःख का कारण शत्रु नहीं बल्कि शत्रुता है। हमें शत्रु का नाश नहीं करना हैं, हमें तो शत्रुता का नाश करना है। एक शत्रु का नाश करेंगे तो हजार शत्रु खडे होंगे, हजार शत्रु का नाश करेंगे तो लाखों शत्रु खडे हो जायेंगे, उसकी कोई सीमा नहीं है। यदि हम शत्रुता का ही नाश कर दें तो जगत में कोई हमारा शत्रु नहीं रहेगा।

प्रश्न : शत्रुता का नाश करना इतना आसान नहीं है, जिन्हों ने हमारा इतना नुकसान किया उन्हें हम कैसे माफ कर दें?

उत्तर : कठिन लगता है क्योंकि हमें ऐसा लगता हैं कि उन्हों ने हमारा बुरा किया। यदि हमारे पुण्य कर्म का उदय होता तो हमारा नुकसान नहीं होता। नुकसान होने का दोष दूसरों को मत दो। अपने कर्मों के उदय से लाभ-नुकसान होता हैं और हाँ, तुम्हें उन पर गुस्सा इसीलिए नहीं आया कि वे आतंकवादी हैं, जब तुमने उन्हें आतंकवादी के रूप में जाना तब गुस्सा आया।

प्रश्न : वे आतंकवादी हैं इसीलिए हमने उन्हें आतंकवादी के रूप में जाना, हमनें उन लोगों को आतंकवादी के रूप में नहीं जाना जो आतंकवादी नहीं थे उसमें हमने क्या गलत किया?

उत्तर : मैं मानता हूँ कि वे आतंकवादी थे इसीलिए तुमने उन्हें आतंकवादी के रूप में जाना।

मगर तुम यह बात क्यों भूल गये कि वे आत्मा भी तो थे। उन्हें आत्मा के रूप में क्यों नहीं जाना? यदि एकबार आप उन्हें आत्मा के रूप में जानते तो निश्चितरूप से आपको गुस्सा नहीं आता। आत्मिक दृष्टि प्रकट होने पर क्रोध आता ही नहीं। क्रोध को दूर करने के लिए इसके अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं है।

प्रश्न : आतंकवाद में अनेकांतवाद का तात्पर्य क्या है?

उत्तर : मारनेवालें और मरनेवालें दोनों ही करुणापात्र हैं। इसी का नाम अनेकांत करूणा हैं। यदि कोई कसाई गाय को मारता है तो अज्ञानी को गाय के प्रति करूणा और कसाई के प्रति क्रोध आता हैं। ज्ञानी को गाय और कसाई दोनों के प्रति करूणा आती हैं। ज्ञानी

दोनों के कर्म के उदय को जानते हुए करूणा करते हैं।

प्रश्न : आप अपने देश को नहीं चाहते क्या? यदि चाहते तो अहिंसा की बातें नहीं करते।

उत्तर : मैं आपसे पूछता हूँ कि गांधीजी ने अहिंसा की राह अपनाई तो क्या वे देश को नहीं चाहते थे? यहाँ तक कि उन्हों ने अहिंसा के बल पर ही हिन्दुस्तान को आजादी दिलाई।

प्रश्न : यदि हम उन आतंकवादियों के प्रति क्षमा और करुणा नहीं करेंगे और अहिंसा की राह नहीं अपनायेंगे तो आप हमारा क्या कर लेंगे?

उत्तर : भाई ! हम कुछ नहीं करेंगे। बस, हम तो तुम्हें आत्मा समजकर तुम्हारे प्रति भी क्षमा

और करुणा की भावना ही करेंगे जैसी क्षमा और करुणा की भावना उन आतंकवादियों के प्रति करते हैं। क्योंकि हमें तो हमारा संसार परिभ्रमण टालना है। अनंतकाल से चल रहे इस संसारचक्र का परिभ्रमण क्षमा और करुणा प्रकट हुए बिना टल नहीं सकता।

❁

यदि आप जोश में आकर यह पढ़ेंगे तो आपको मुज पर भी क्रोध आ सकता है, किन्तु जब ठंड़े दिमाग से होश में रहकर सोचेंगे तब आपकी समज में आयेगा कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।

यदि इस चिंतन से किसी की भावनाओं को ठेस पहूँची हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। सभी जीव राग-द्वेष रहित होकर अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करे ऐसी मंगल भावना के साथ विराम लेता हूँ।